रसखान

हिन्दी साहित्य में कृष्णभक्ति-काव्यधारा के अंतर्गत सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, नंददास, हितहरिवंश, मीराँबाई आदि अनेकानेक कवि-कवयित्री हुए। उनमें अनन्य कृष्णभक्त मुसलमान कवि रसखान जी का स्थान अन्यतम है। आप कोमल हृदयवाले, भावुक प्रकृति के इंसान थे। इसलिए दिल्ली के बादशाह-वंश में जन्म लेते हुए भी उन्होंने अपने को राज्यलिप्सा और राज-वंश के अभिमान से दूर रखा। प्रसिद्ध है कि वे श्रीमद्भागवत का फारसी अनुवाद पढ़कर गोपियों के कृष्ण-प्रेम से अभिभूत हुए थे और अपने को भी श्रीकृष्ण की भक्ति में निमज्जित कर दिया था।

कवि रसखान जी के जन्म-समय, शिक्षा-दीक्षा, आजीविका, निधन-काल आदि बातों को लेकर विद्वानों में आज भी मतभेद बना हुआ है। कहा जाता है कि 1533 ई. के आस-पास आपका जन्म हुआ था और 1618 ई. के आस-पास आपकी मृत्यु हुई थी। प्रसिद्ध है कि गोकुल में आपने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से भक्ति की दीक्षा ग्रहण की थी। यह बात भी प्रसिद्ध है कि रामभक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रसखान को यमुना के तट पर स्वरचित 'रामचरितमानस' की कथा सर्वप्रथम सुनायी थी। अपने आराध्य से संबंधित सारे उपकरण और सभी स्थान, जैसे-गोकुल, गोवर्धन, ब्रज, वृन्दावन आदि रसखान जी को अत्यंत प्रिय रहे।

प्रेम-भक्ति के कवि रसखान की चार रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं- **'सुजान-रसखान', 'प्रेमवाटिका', 'दानलीला'** और **'अष्टयाम'**। आपकी काव्य-भाषा साहित्यिक ब्रज है, जिसमें सहजता, मधुरता और सरसता सर्वत्र विराजमान है। आपने दोहा, कवित्त और सवैया छंदों का ही अधिक प्रयोग किया है। भावुक हृदय से बनी उनकी रचनाओं में भक्ति-रस, प्रेम-रस और काव्य-रस तीनों भरपूर विद्यमान हैं। अत: कवि का नाम 'रसखान' (रस की खान) पूर्णत: सार्थक बन पड़ा है।

*'**कृष्ण-महिमा**' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित चारों छन्द **सुजान-रसखान** से लिए गए हैं। इन चारों छन्दों से कृष्ण-भक्ति की महिमा ही प्रकट हुई है। भाव की तल्लीनता, मार्मिकता और भाषागत सरसता चारों छंदों में विद्यमान है। **प्रथम छंद** में अपने आराध्य कृष्ण के सान्निध्य में रहने की कवि गहरी इच्छा का संकेत मिलता है। **दूसरे छंद** में अपने उपास्य से जुड़े अलग-अलग उपकरणों पर सर्वस्व न्योछावर करने की चाहत व्यंजित हुई है। **तीसरे छंद** में कवि ने आराध्य श्रीकृष्ण के बाल-रूप की माधुरी का आकर्षक वर्णन किया है। **चौथे छंद** में गोपी-भाव से अपने उपास्य कृष्ण की तरह ही वेश धारण करने (मुरली को छोड़कर) की तीव्र चाहत प्रकट हुई है।*

कृष्ण-महिमा

(1)

मानुष हौं तो वही रसखान,बसौं ब्रज-गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिली कालिन्दी-कुल-कदंब की डारन॥

(2)

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर कौ तजि डारौं।
आठ हूँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नंद की गाइ चराइ बिसारौं।
'रसखान कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।'
कोटिक हौं कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

(3)

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना, पग पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।
वा छवि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों लै गयों माखन रोटी॥

(4)

मोर पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर, ले लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।
भावतो वोहि मेरे 'रसखानि,' सो तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरीं अधरा न धरौंगी॥

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

1. सही विकल्प का चयन करो :

(क) रसखान कैसे कवि थे ?
(1) कृष्णभक्त (2) रामभक्त (3) सूफी (4) संत

(ख) कवि रसखान की प्रामाणिक रचनाओं की संख्या है –
(1) तीन (2) दो (3) चार (4) पाँच

(ग) पत्थर बनकर कवि रसखान कहाँ रहना चाहते हैं ?
(1) हिमालय पर्वत पर (2) गोवर्धन पर्वत पर
(3) विंध्य पर्वत पर (4) नीलगिरि पर

(घ) बालक कृष्ण के हाथ से कौआ क्या लेकर भागा ?
(1) सूखी रोटी (2) दाल–रोटी
(3) पावरोटी (4) माखन–रोटी

2. एक शब्द में उत्तर दो :

(क) रसखान ने किनसे भक्ति की दीक्षा ग्रहण की थी ?

(ख) 'प्रेमवाटिका' के रचयिता कौन हैं ?

(ग) रसखान की काव्य–भाषा क्या है ?

(घ) आराध्य कृष्ण का वेष धारण करते हुए कवि अधरों पर क्या धारण करना नहीं चहते ?

(ङ) किनकी गाय चराकर कवि रसखान सब प्रकार के सुख भुलाना चाहते हैं ?

3. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) कवि रसखान कैसे इंसान थे ?

(ख) कवि रसखान किस स्थिति में गोपियों के कृष्ण–प्रेम से अभिभूत हुए थे ?

(ग) कवि रसखान ने अपनी रचनाओं में किन छंदों का अधिक प्रयोग किया है ?

(घ) मनुष्य के रूप में कवि रसखान कहाँ बसना चाहते हैं ?

(ङ) किन वस्तुओं पर कवि रसखान तीनों लोकों का राज न्योछावर करने को प्रस्तुत हैं ?

4. अति संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

(क) कवि का नाम 'रसखान' किस प्रकार पूर्णत: सार्थक बन पड़ा है ?

(ख) 'जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कुल-कदंब की डारन' - का आशय क्या है ?

(ग) 'वा छबि कों रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी' - का तात्पर्य बताओ।

(घ) ''भावतो वोहि मेरे 'रसखानि', सो तेरे कहे सब स्वांग भरौंगी'' - का भाव स्पष्ट करो।

5. संक्षेप में उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) कवि रसखान अपने आराध्य का सान्निध्य किन रूपों में प्राप्त करना चाहते हैं ?

(ख) अपने उपास्य से जुड़े किन उपकरणों पर क्या-क्या न्योछावर करने की बात कवि ने की है ?

(ग) कवि ने श्रीकृष्ण के बाल-रूप की माधुरी का वर्णन किस रूप में किया है ?

(घ) कवि ने अपने आराध्य की तरह वेश धारण करने की इच्छा व्यक्त करते हुए क्या कहा है ?

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में) :

(क) कवि रसखान का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

(ख) कवि रसखान की कृष्ण-भक्ति पर प्रकाश डालो।

(ग) पठित छंदों के जरिए कवि रसखान ने क्या-क्या कहना चाहा है ?

7. **सप्रसंग व्याख्या करो (लगभ 100 शब्दों में) :**

(क) 'मनुष्य हौं तो वही ..... नित नंद की धेनु मँझारन।'

(ख) 'रसखान कबौं इन आँखिन ..... करील के कुंजन ऊपर वारौं॥'

(ग) 'धूरि भरे अति सोभित ..... पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।'

(घ) 'मोरा-पखा सिर ऊपर राखिहौं ..... गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।'

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

(क) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो :

मानुष, पसु, पाहन, आँख, छबि, भाग

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो :

कृष्ण, कालिंदी, खग, गिरि, पुरंदर

(ग) संधि-विच्छेद करो :

पीताम्बर, अनेकानेक, इत्यादि, परमेश्वर, नीरस

(घ) निम्नलिखित शब्दों के खड़ीबोली (मानक हिंदी) में प्रयुक्त होने वाले रूप बताओ :

मेरो, बसेरो, अरु, कामरिया, धूरि, सोभित, माल, सों

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के साथ भाववाचक प्रत्यय 'ता' जुड़ा हुआ है -

सहजता, मधुरता, सरसता, तल्लीनता, मार्मिकता

- ऐसे ही 'ता' प्रत्यय वाले पाँच भाववाचक संज्ञा-शब्द लिखो।

योग्यता-विस्तार

(क) पठित छंदों का सस्वर पाठ करो।

(ख) 'सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहुँ, जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं।
नारद से सुक व्यास रटे, पचि हारे पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥'

- कवि रसखान द्वारा रचित प्रस्तुत छंद का भावार्थ अपने शिक्षक की सहायता से समझने का प्रयास करो।

(ग) श्रीकृष्ण के बाल-रूप वर्णन से संबंधित पठित छंद की तुलना कवि सूरदास द्वारा रचित निम्नलिखित पद के साथ करो :

'सोभित कर नवनीत लिये।
घुटुरनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए।
कठुला-कंठ बज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प जिए॥'

(घ) असम के महापुरुष श्रीश्री माधवदेव जी ने अपने कुछेक बरगीतों में श्रीकृष्ण के बाल-रूप और उनकी बाल-लीलाओं का सुंदर वर्णन किया है। ऐसे बरगीतों का संग्रह करके रसखान और सूरदास विरचित समान भाव वाले छंदों के साथ उनकी तुलना करो।

(ङ) अपने शिक्षक की सहायता से रसखान और मीराँबाई की कृष्ण-भक्ति की तुलना करने का प्रयास करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

(1)

मानुष = मनुष्य
हौं = बनूँ
बसौं = निवास करूँगा
ग्वारन = ग्वाल लोग
पसु = पशु
बसु = वश
मेरो = मेरा
धेनु = गाय
मँझरन = बीच, मध्य
पाहन = पत्थर
धरयौ = धारण किया
कर = हाथ
पुरंदर = इंद्र, विष्णु
धर्‌यौ कर छत्र पुरंदर धारन = इंद्र के अहंकार का नाश करने के लिए कृष्ण जी गोवर्धन पर्वत को छत्र के समान धारण किया था
जो = यदि, अगर
खग = पक्षी, चिड़िया
बसेरो = बसेरा, निवास
कालिंदी-कुल-कदंब = यमुना नदी के किनारे स्थित कदंब का पेड़
डारन = डालियाँ